IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा का प्रथम संस्कृत ग्रन्थ – सुश्रुत संहिता

प्रस्तुतकर्ता

ड़ॉ. सीमा मीणा

सहायक आचार्य इतिहास

स.पृ.चौ.राजकीय महाविद्यालय,अजमेर

शोध पत्र सार : भारत में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में शल्यचिकित्सा के जनक **महर्षि सुश्रुत** ने अपने गुरु काशी के राजा दिवोदास धन्वंतरि के ज्ञान और शिक्षाओं को मानवीय शारीरिक संरचना के अनुरुप शल्यचिकित्सा के ज्ञान को सुनकर अपनी स्मृति व ज्ञान के आधार पर **सुश्रुत संहिता** में संकलित व सूचीबद्ध कर संस्कुत भाषा में लेखबद्ध किया। शल्यचिकित्सा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर तकनीकों और ऑपरेशन के लिए एक क्रांतिकारी ज्ञान के मुख्य स्त्रोत के रुप में सुश्रुत संहिता उपयोगी सिद्ध हुई। सुश्रुत संहिता में उल्लेखित शल्यतंत्र या सर्जिकल विज्ञान की अवधारणा सर्वव्यापी हो गई। जिसमें प्रमुखतः राइनोप्लास्टी–नासिका का पुनर्निमाण करना, वृक्क से पथरी को निकालने के लिए मूत्राशय अंग पर चीरा लगाना,मृत भ्रूण को निकालना साथ ही मनुष्य के शरीर का विच्छेदन कर उसकी आंतरिक व बाहरी संरचना के अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक शल्य तकनीकों का उल्लेख हैं। सुश्रुत संहिता आयुर्विज्ञान,औषध विज्ञान, बाल चिकित्सा,विष विज्ञान, मानव के शरीर की आंतरिक व बाहरी संरचना और विभिन्न अंगो की क्रियाओं तथा भारतीय चिकित्सा की विभिन्न पारंपरिक प्रणाली की अन्य शाखाओं पर भी विवरण प्रस्तुत करती है। सुश्रुत,चरक और वाग्भट्ट महर्षियों को आयुर्वेदिक ज्ञान की **त्रिमूर्ति** माना जाता है। 800 ईसा पूर्व और 1000 ईसा पूर्व के मध्य की अवधि भारतीय चिकित्सा का स्वर्ण युग रहा।सुश्रुत शल्यचिकित्सा के प्रमुख पुनर्संगठक है जिनकी तकनीक आज भी विद्यमान व प्रभावी है।

सांकेतिक शब्द : सुश्रुत संहिता, शल्यचिकित्सा, तकनीक, आयुर्विज्ञान ।

उद्देश्य–

वैश्विक स्तर पर भारत के प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा से संबंधित ग्रन्थों में वर्णित मानव की शारीरिक संरचना, रक्त व आन्तरिक व बाहरी अंगो की क्रियाओं का चिकित्सा पद्धति में उल्लेखित रोगों की पहचान कर काय चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा प्रक्रिया के द्वारा रोग का निवारण या उपचार करन में सुश्रुत संहिता का चिकित्सा के क्षेत्र में स्वास्थ्य समस्याओं के निराकरण हेतु व मानव शरीर को राहत पंहुचाने में सक्षम तथ्यों का विश्लेषण,मूल्यांकन कर उसके महत्व, उत्कृष्टता व उपादेयता को वर्णित करना है।

शोध की परिकल्पना

मानव शरीर में गर्भावस्था के दौरान या जन्म से लेकर मृत्यु तक शारीरिक संरचना, शारीरिक व्याधियों के लक्षण,उचित व्याधियों का ज्ञान, व्याधि के उपचार हेतु उचित जड़ी–बूटियां, समयानुकूल उचित औषधी का उपयोग,निदान, प्रभाव, और क्रियाकलापों का समयानुरुप प्रयोग में लाकर ग्रसित रोगी को काय चिकित्सा या शल्य चिकित्सा द्वारा स्वस्थ बनाना ही सुश्रुत संहिता का मूल ध्येय रहा।

विषय परिचय–

आयुर्वेदिक[1] शल्यचिकित्सा के प्रणेता आचार्य सुश्रुत द्वारा संस्कृत भाषा में गद्य–पद्य रुपों में संकलित **सुश्रुत संहिता** शल्य चिकित्सा को समर्पित एक प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ है जिसमें मानव शरीर की शल्य चिकित्सा के संबंध में विभिन्न तकनीकों और सिद्धान्तों का उल्लेख है। आधुनिक काल में विश्व में आचार्य सुश्रुत के शारीरिक रचना विज्ञान, पैथोफिज़ियोलॉजी और राइनोप्लास्टी अर्थात् नासिका के पुनर्निर्माण के लिए गाल फ्ल्प (the cheek flap for nasal reconstruction) के निर्माण के लिए प्राचीन भारत में संक्रमण पर केन्द्रित शल्यचिकित्सा की प्रविधि के लिए सिद्धान्त,निदान और उपचार का आयुर्वेद शाखा का सुश्रुत संहिता एक प्रेरक ग्रन्थ है इसलिए आचार्य सुश्रुत को प्लास्टिक सर्जरी के जनक की उपाधि से विभूषित किया गया। सुश्रुत संहिता के 186 अध्यायों में 1,120 बीमारियों, 700 औषधीय पौधों, 64 खनिज स्त्रोतों तथा 57 पशु संबंधित चिकित्सा का वर्णन है। सुश्रुत संग्रह विश्व का प्राचीनतम् अथर्वेद का उपवेद आयुर्वेद अर्थात् जीवन का विज्ञान माना जाता है। जो पारंपरिक भारतीय स्वदेशी शल्यचिकित्सा पद्धति का मूल ग्रन्थों में से एक उन्नत–समृद्ध संस्कृत भाषा में संकलित अग्रणीय ग्रन्थ है। समृद्ध विरासत के धनी आचार्य सुश्रुत[2] के शिक्षक दिवोदास थे और दिवोदास के शिक्षक आयुर्वेद के ज्ञाता ऋषिवर धन्वंतरि थे।धन्वंतरि सम्प्रदाय के काशीराज दिवोदास ने सुश्रुत के साथ–साथ औपनधेनव,औरभ्र,पौषकलावत,गोपुररक्षित और भोज को भी शिक्षा दी।[3] आचार्य सुश्रुत ने तर्कसंगत और तार्किक प्रविधियों और उपायों से शारीरिक बीमारी और विकृति का निश्चित रुप से निवारण किया। भारत में प्रासंगिक शल्यचिकित्सा संबंधित विज्ञान और कला में उनके मौलिक योगदान के कारण विभिन्न शल्यचिकित्सा प्रक्रियाओं के अन्तर्गत– नासा संधाना, कर्णसंधाना, सिरवेधा, अस्थिभंग, संधिभंग, ह्ड्डियों की विकृतता या जोडों का टूटना आदि के अद्वितीय मौलिक योगदान के कारण शल्यचिकित्सा के जनक माने गये। सुश्रुत संहिता की प्रभावशाली प्रकृति, जो शल्यचिकित्सा के संबंध में सुश्रुत के सिद्धान्तों का दस्तावेजीकरण करती है, न केवल इसमें उल्लेखित शारीरिक ज्ञान और शल्यचिकित्सा के प्रक्रियात्मक विवरणों द्वारा समर्थित है,वरन् उन रचनात्मक दृष्टिकोणों द्वारा भी समर्थित है जो वर्तमान में भी पूर्ण रुप से प्रासंगिक है।

आयुर्वेद के प्राचीन और उत्कृष्ट मानक मूल ग्रन्थ–

भारतीय आयुर्वेदिक पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के अध्ययेताचरक[4] का कायचिकित्सा(medicine) ,सुश्रुत का शल्य तंत्र (surgery) और वाग्भट[5] का अष्टांगसंग्रह तथा अष्आंगह्दयम संहिताओं का कृतयुग , द्वापर युग और कलियुग जो विज्ञान की श्रेणी में बृह्त्त्रयी के नाम से प्रामाणिक अथर्ववेद[6] में वर्णित आयुर्वेदिक जगत में कई सहस्त्राब्दियों से उच्च सम्मान से अभिप्रेरित हैं।

सुश्रुत संहिता की प्रकृति और संरचना[7]–

सुश्रुत संहिता के उपदेष्टा काशिराज धन्वन्तरि है। श्रोता रुप में सुश्रुत औपधेनव,वैत्तरणी,औरभ्र, पौष्कलावत, करवीर्य, गोपुररक्षित रहे। सम्पुर्ण संहिता सुश्रुत को सम्बोधन करके कही गयी है।सुश्रुत के लिए वत्स विश्लेषण आता है। सुश्रुत ने शल्यशास्त्र के अध्ययन की इच्छा प्रकट की थी, इसलिए धन्वन्तरी ने मानव के शारीरिक अंगों की प्रमुखता का कारण का वर्णन किया और बताया कि शल्य क्रिया द्वारा अंगो का उपचार शीघ्र हो जाता है।यंत्र,शस्त्र आदि से रोग का आसानी से पता लगाया जा सकता है, शेष काय चिकित्सा आदि तंत्रों को भी इसकी अपेक्षा रहती है इसलिए शल्यचिकित्सा मुख्य है।

वैदिक काल में भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पर गद्य–पद्य में संग्रहित सुश्रुत संहिता में गद्य में कुल संख्या में लगभग 8500 छंद है, 186 अध्याय और 6 अनुभाग जो कई भागों में विभक्त है। सुश्रुत के सुत्र,निदान,शरीर और कल्प स्थानों में शल्य विषय ही प्रधान है,उत्तर तंत्र में कायचिकित्सा से संबंधित ज्वर, व अंगों की बाह्य पीड़ा का वर्णन है। धन्वन्तरी को शल्यचिकित्सा में निपुण व पारंगत व शल्यचिकित्सा का पर्याय बताया है–

धनुः शल्यं तस्य अन्तं पारमियर्ति गच्छतीति धन्वन्तरिः।

1. **सूत्र स्थान** 46 भागों में विभक्त है– जिसमें शल्य चिकित्सा के बुनियादी मौलिक सिद्धान्तों में वैद्य की आचार संहिता का वर्णन और काम में आने वाले उपकरण का परिचय,उनका नाम, आकृतियां और उनके अनुप्रयोग के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख है साथ ही रोगाणुरोधक दवाईयां ,उनके प्रयोग करने के तरीकें, पट्टी बांधने की विधियां,घाव का भरना,घाव को अग्नि से दागना,दाह कर्म, उबकाई आना,उदर को साफ रखना, पूर्वानुमान, औषधीय जड़ी बूंटियों का संग्रहण व संरक्षण तथा व्यायाम करने के तरीकें खाद्य पदार्थ और मौसमी आहार का उल्लेख है।

2.**निदान स्थान** 16 अध्यायों में विभक्त है– नाड़ी तंत्र की विधि के द्वारा 16 प्रकार की व्याधियां या रोग के लक्षण की पहचान करना ,रोग निदान करना आदि है जैसे– वात, पित्त,कफ, गुर्दा रोग, नासूर का होना, कुष्ठ रोग,त्वचा रोग, मधुमेह रोग, उदर रोग, भ्रूण रोग,घाव का सड़ना, स्तन रोग,निद्रा रोग,साइनस, गलग्रंथी रोग थॉयराइड़, त्वख रोग, मुंह रोग, जबड़े का सड़ना,दातों का रोग, रीढ़ हड्डी रोग,सरवाइकल,मेटास्टेटिक कैंसर,घातक ट्यूमर,ग्रीवालिम्फैडेनाइटिस,सर्प दंश रोग, हड्डी का विकृत होना,टूटना आदि मानव शरीर से संबंधित रोगों और उनके निदान का विस्तृत वर्णन है।

3.**शरीरा स्थान** 10 अध्यायों में विभक्त है– जिसमें मानव शरीर की शारीरिक रचना,अंगो का वर्णन,शरीर क्रिया विज्ञान में मन की प्रकृति और प्रकृति का मन व शरीर पर प्रभाव,मस्तिष्क की विभिन्न क्रियाएं, भ्रूण विज्ञान,आनुवंशिकी,शिराविच्छेदन, अंडाणु व शुक्राणु की गुणवत्ता,निषेचन,मासिक धर्म,गर्भ वुद्धि,प्रजनन क्षमता,बांझपन, कार्डिक रोग, असामयिक मृत्यु, अशांत मनोस्थिति तथा विभिन्न विकारों की संरचनात्मक रुप से व्याख्या की गई है साथ ही इन से संबंधित रोगो के निवारण का भी विसतृत उल्लेख है।

4.**चिकित्सा स्थान** 40 अध्यायों में विभक्त है– जिसमें अल्सर,भोजन का अपचन,घाव, अनियमित हड्रियों का बढ़ना या ह्डियों का भंग होना, बवासीर, गुर्दे की पथरी एवं मूत्र नलिका का रोग, फोड़े–फुन्सियों के जख्म, कुष्ठ रोग के लक्षण,त्वचा रोग मधुमेह,उदर रोग आदि रोगों के निवारक व उपचार का विस्तार से वर्णन किया गया है। साथ ही कामोत्तेजक चिकित्सा, कायाकल्प चिकित्सा, शरीर में रक्त की कमी संबंधी चिकित्सा,श्वास संबंधी फेफड़ो का रोग,नासिका व गले के गरारे की चिकित्सा भी वर्णित है।

5.**कल्प स्थान** 08 अध्यायों में विभक्त है– जिसमें विष या जहर की पृकृति, विभिन्न प्रकार के जहरीलें खाद्य पदार्थ,पेय,सब्ज़िया,खनिजों में उपलब्ध जहर और सांप,कुत्ता,चूहा,भेड़िया,लोमड़ी व अन्य जानवरों के मानव शरीर पर काटने पर जहर के प्रकारों के लक्षण ,प्रभाव और उपचार का वर्णन है।

6.**उत्तर स्थान** 66 अध्यायों में विभक्त है जिसमें मूलतः चार प्रमुख रोगों का वर्णन है– आंख–नाक–कान का रोग, बाल रोग,काया चिकित्सा सामान्य दवा और भूत विद्या के साथ–साथ बुखार,संक्रमण,,खून की कमी,अतिसार या पेचिश,खांसी, पीलिया आदि रोगों के लक्षण व उपचार हुतु उचित औषधियों का वर्णन है।

इनके अतिरिक्त चमड़ी का जलना,सिकुड़ना या रक्त वर्ण की होना आदि का सामान्य उपचार व शल्य चिकित्सा भी वर्णित है। आचार्य सुश्रुत का मानना है कि यदि मानव वात,पित्त और कफ में संतुलन बनाये जैसे अग्नि–पाचन तंत्र,धातु, अपशिष्ट पदार्थ का उन्मूलन एक उचित क्रम में हों तो वह एक स्वस्थ व्यक्ति की पहचान है । आत्मा,इन्द्रियां और मन को भी प्रसनन रखना अनिवार्य है। इस प्रकार सुश्रुत संहिता रोग की पहचान और उपचार का एक प्रासंगिक उत्तम कोटि का ग्रन्थ है।

सुश्रुत संहिता में शरीर में रक्त का महत्व [8]

आचार्य सुश्रुत ने मानव शरीर में रक्त की संरचना,प्रकार, परिसंचरण, उसका महत्व आदि का विस्तार से वर्णन किया है उनके अनुसार रक्त ही शरीर को स्वस्थ और अस्वस्थ रखने का प्रमुख कारक है। सुश्रुत संहिता में रक्त को स्वस्थ व शुद्ध बनाये रखने के लिए मुख्य सिद्धान्तों और उपायों को इंगित करते है। रक्त की कमी होना,रक्तपात या रक्तमोक्षण होना,रक्त का अशुद्ध होना, रक्त का गाढ़ा या पतला होना,रक्त की श्वेत या लाल कणिकाओं का कम या अधिक होना,रक्त के परिसंचरण का तीव्र या क्षीण होना, रक्त में शर्करा का अधिक या कम होना,रक्त का थक्का बनना,हृदय और मस्तिष्क तक रक्त के प्रवाह का ज्ञान, नाड़ी–धमनी व शिरा तंत्रों में रक्त के प्रवाह का ज्ञान सुश्रुत संहिता में प्राथमिक रुप से वर्णित है। सिर व्याधि को शल्य चिकित्सा के द्वारा क्षति से बचाया जा सकता है।

आधिदैविक चिकित्सा– रोगी के मन तथा शरीर को शुद्ध करने के लिए नाखून की सफाई, सिर के बालों को काटकर छोटे करना और शरीर पर श्वेत वस्त्र धारण साथ ही सात्विक भोजन ग्रहण करना करना अनिवार्य था।

शल्य चिकित्सा उपकरण [9]– चिकित्सक आचार्य सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा में प्रमुखतः चिकित्सक की हाथों और अंगुलियों को प्रधान शल्य चिकित्सा का महत्वपूर्ण उपकरण बताया। इसके साथ ही तेज या तीक्ष्ण धार sharp instruments वाले 16 तथा कम धार blunt instruments वाले 15 उपकरणों का वर्णन किया है ।

शस्त्र कर्म के उपयोगी साधनों को यंत्र,क्षार,अग्नि,जलौका के रुप में वर्णित है। प्रधान यंत्र हाथ है,मन और शरीर जिससे कष्ट पहुंचे वह शल्य है। कम धार blunt instruments वाले यंत्र छः प्रकार के यंत्र वर्णित है– स्वास्तिक, संदेश, ताल, नाड़ी, शलाका आदि ।

क्रमांक	आयुर्वेदिक नाम	आधुनिक नाम	कुल संख्या
1	स्वस्तिक यंत्र	कूसिफ़ार्म उपकरण	24
2	समदंश यंत्र	चिमटा	2
3	तल यंत्र	फ्ल्ट डिस्क	2
4	नाड़ी यंत्र	ट्यूबलर	20
5	शलाका यंत्र	छड़	28
6	उपयंत्र	सहायक	25

नाखून, उंगलिया,चाकू,सुचि सर्जिकल सुई, लम्बी छुरी, कांटा, कैंची, घुमावदार वृत्त आकृति का नुकीला उपकरण तथा दुधारी धारदार उपकरण आदि। संधि मुक्ता अर्थात् हड्डी का टूटना फ्रैक्चर या हड्डी का अपने संधि बिन्दू से खिसक जाना या डिस्लोकेशन होने के उपचार को विस्तार से वर्णित किया है। साथ ही खोपड़ी या कपाल का भग्ना या फ्रैक्चर के उपचार के सिद्धांत भी स्पष्ट वर्णित है।

उपकरणों की तीक्ष्णता : शल्य चिकित्सा से संबंधित काम आने वाले उपकरण विभिन्न अंगों की शल्य चिकित्सा के अनुरुप बनाये जाते थे। कर्ण व नासिकावेधन की प्रक्रिया को विस्तार से लिखा गया है।

प्लास्टिक सर्जरी के प्रसंग में वर्णित है कि अन्य स्थान से मांस काटकर या कपोल के मांस से नाक बनाने का दल्लेख है –

विश्लेषितायास्त्वथ नासिकाया वक्ष्यामि सन्धानविधिं यथावत् ।
नासाप्रमाणं पृथिवीरुहाणां पत्रं गृहीत्वा त्वयम्बितस्य।।
तेन प्रमाणेन हि गण्ड पार्श्यादुत्कृत्य बद्धत्वचं नासिकाग्रम।
विलिख्य चाशु प्रति संदभीत सतत् साधु बन्धैभिषगप्रमतः ।।

सुश्रुत संहिता अध्याय 18/27/28

सुश्रुत संहिता की मौलिक विशेषताएं [10]

- ❖ काव्यात्मक शैली में उद्धरणों के साथ लेखबद्ध सुश्रुत संहिता आयुर्वेद की शल्य चिकित्सा की एक अतिविशिष्ट शाखा के प्रकार में विश्व में प्रथम स्तर पर प्लास्टिक सर्जरी का प्रतिनिधित्व कर रहीं है।
- ❖ आचार्य सुश्रुत मानव शरीर की मूलतः पांच अस्थियों का उल्लेख किया हैः कपाल– चपटी अस्थि, रुचका– दांत अस्थि, वलाया– चक्रित या घुमावदार अनियमित अस्थियां, तरुण– युवा अस्थि और नालका अर्थात् ट्यूबलर अस्थियां।
- ❖ आचार्य सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा के सफल उपचार के लिए सद्गुणों से युक्त चार महत्वपूर्ण सक्रिय जिम्मेदार व्यक्तियों का वर्णन किया हैः वैद्य–चिकित्सक, रोगी, भेषज– रोग उपचार संबंधित दवा और परिचारक अर्थात् रोगी की देखभाल या सेवा के प्रति समर्पित रहने वाले अनुचर। इन चारों की महतती सेवा भाव से ही रोगी को अल्प समय में ही उपचार करने में सहायक होते है।
- ❖ आचार्य ने शास्त्र कर्म के प्रमुख आठ प्रकारों का उल्लेख किया हैः छेदना–चीरा देना, भेद्य– अंग को जरुरत अनंसार अलग करना, लेख्य–खुरचना,वेध्य– छेदना,एश्या– रोग की जांच करना, आहार्य– बाहर निकालना,विश्रव्य – द्रव निकालना तथा सिव्या अर्थात् सिलाई करना।
- ❖ आचार्य ने वृक्क व मूत्र पथरी– अश्मरी और मूत्र–मूत्राशय अर्थात् बस्ती की मूल शारीरिक रचना तथा उसके लक्षण, निकालने की विधि और शल्य चिकित्सा का वर्णन अध्याय– **अश्मरिचिकित्सितोक्रमः** में विस्तार से किया है। साथ ही शल्य चिकित्सा की सफलता के लिए यह भी उक्ति प्रस्तुत की है कि एक चिकित्सक को विज्ञान की रोग से संबंधित प्रासंगिक सहयोगी शाखओं का भी ज्ञान अनिवार्य रुप से होना चाहिये।

- ❖ आचार्य ने वर्णित किया है कि एक बुद्धिमान चिकित्सक को हेमंत,शिशिरा और बसंत ऋतुओं में शल्य चिकित्सा करने के तीन दिनों के बाद, शरद व ग्रीष्म ऋतुओं में दो दिनों के बाद तथा वर्षा ऋतु में दो दिनों के बाद रोगी की पट्टियां हटानी चाहिये। जिससे रोगी के घाव आसानी से भरने के लिए मरहम लगाने का भी उल्लेख है।
- ❖ आचार्य ने व्यक्तियों के स्वस्थ व स्वास्थ्य संतुलन को बनाये रखने के उपायों का भी वर्णन किया है– वात,पित्त और कफ में संतुलन बनाये रखने पर जोर दिया। इन्द्रियां, मस्तिष्क और मन या आत्मा को प्रसन्न रखने की अनिवार्यता पर बल दिया।
- ❖ चिकित्सक को केवल शल्य चिकित्सा का सैद्धान्तिक ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं हे वरन् उसमें बात्मविश्वास के साथ–साथ व्यावहारिक अनुभव होना भी अनिवार्य है। योग्यसूत्रेय अध्याय में शल्य चिकित्सा प्रदर्शन तकनीकों का भी विस्तार से उल्लेख है। एक सफल चिकित्सक को शल्य चिकित्सा की प्रक्रियाओं में दक्ष,कौशल से परिपूर्ण तथा व्यावहारिक ज्ञान का अध्येयता बताया।

निष्कर्ष–

आचार्य सुश्रुत द्वारा लेखबद्ध **सुश्रुत संहिता** प्राचीन भारतीय विज्ञान का शल्य चिकित्सा का पहला ग्रन्थ जो सरल,सटीक, तार्किक और व्यावहारिक गहन ज्ञान के द्वारा वैश्विक स्तर पर शल्य चिकित्सा के जनक आचार्य सुश्रुत ने नये आयाम प्रस्तुत किये जिससे आयुर्वेद के द्वारा मानव वात, पित्त और कफ से संबंधित बीमारिया के वर्णन और प्रबंध नतक रोगों से मुक्त रहने की प्रक्रिया, रक्त को शुद्ध रखने की प्रक्रिया, शरीर को योग क्रिया द्वारा स्वस्थ रखने की प्रक्रिया तथा शरीर से अस्थि भंग या विच्छेदन होने पर शल्य क्रिया द्वारा उसे जोडने की प्रक्रिया आदि मानव के स्वास्थ्य से संबंधित चिकित्सा विज्ञान के सभी पहलूओं के प्रचार– प्रसार में उत्कृष्टता की प्रतीक सुश्रुत संहिता ने ऐतिहासिक योगदान देकर शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में नये मौलिक सिद्धान्त स्थापित किये। भारतीय पारंपरिक चिकित्सा और भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति आचार्य सुश्रुत का योगदान अविस्मरणीय है। सुश्रुत संहिता मूलतः सभी आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सरें के लिए प्रमुखरुप में एक संदर्भित ग्रन्थ है। विश्व स्तर पर आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा का एक **अद्वितीय विश्वकोश सुश्रुत संहिता** ग्रन्थ के संदर्भ में आचार्य सुश्रुत को **सर्जरी का जनक** और **प्लास्टिक सर्जरी का जनक** के रुप में सम्मानित किया गया। इस ग्रन्थ का प्रायः विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

सन्दर्भ

1. अत्रिदेव विद्यालंकार के अनुसार– वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है ज्ञान। ऋक,यजु,साम और अथर्व चार वेद, चार उपांग–धनुर्वेद,गान्धर्व वेद,स्थापत्य वेद और आयुर्वेद।

महर्षि चरक का वक्तव्य है कि

'चतुर्णामृक्सामयजुरथर्ववेदानामथर्ववेदे भक्तिरादेश्या'।

आचार्य सुश्रुत का कथन है कि–

'इह खलु आयुर्वेदमष्टांग्मार्विवेदस्य'।

उपांग का अर्थ निकटवर्ती मुख्य भाग है । आयुर्वेद का अथर्ववेद के साथ अतिशय संबंध है।आयुर्वेद मूलतः प्राकृतिक वस्तुओं से ही ज्ञवास्थ्य की प्राप्ति का निर्देश देता है जैसे जल, प्राकृतिक जड़ी–बूटियां औषध अर्थात् वनस्पतियों का ही उल्लेख करता है।

2. विश्व इतिहास विश्वकोष (World History Encyclopedia) में 6ठी या 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व में जन्मे आचार्य सुश्रुत का जन्म नाम अज्ञात होना बताया है क्योंकि सुश्रुत एक विशेषण है जिसका अर्थ प्रसिद्ध है।
3. अग्रवाल,डी.पी. सुश्रुतः प्राचीन काल के महान् शल्यचिकित्सक http://www.infinityfoundation.com/mandala/t_es/t_es_agraw_susruta_frameset.htm ।
4. भारत में मानव के शारीरिक रुप से स्वस्थ रहने के लिए 3000 वर्ष पूर्व आयुर्वेद विशारद महर्षि चरक ने चिकित्सा पारंपरिक स्वास्थ्य में बाधक रोगों के लक्षण–कारण और उनके उपचार की एक सुव्यवस्थित प्रणाली को संस्कृत भाषा में चरक संहिता ग्रन्थ में लेखबद्ध किया। जिसमें शारीरिक व्यायाम,प्राकृतिक जड़ी–बूटियां का प्रयोग और योग द्वारा उपाचारात्मक उपायों का विस्तृत वर्णन है। चिकित्सक आचार्य चरक द्वारा पृथ्वी, जल,अग्नि,वायु और आकाश के साथ–साथ जीन शारीरिक वात,पित्त और कफ के संदर्भ में मानव शरीर का विश्लेषण किया गया है। महर्षि चरक के अनुसार शरीर में मौजूद वात, पित्त और कफ जैसे स्थायी तीन गुण जब तक संतुलित अवस्था में रहते हैं तभी तक मानव का शरीर स्वस्थ रहता है। जैसे ही इनके संतुलन बिगड़ने लगता है मानव शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। महर्षि चरक ने चिकित्सिकों को रोगी के प्रति सेवा भाव रखने और जान बचाने की प्राथमिकता देने का भी संदेश दिया। चरक संहिता में भोजन,स्वच्छता,बीमारियों से बचने के उपाय, चिकित्सा–शिक्षा,वैद्य या चिकित्सक,धाय और रोग से लड़ने के विषय पर विस्तृत लिखा गया है। आरोग्यता से शारीरिक बल,आयु,सुख,अर्थ,धर्म,काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विद्यालंकार,सत्यकेतु , महर्षि चरक,, हिन्दी भाषा, लघु पुस्तिका, आर्य प्रकाशन, बनारस,1962 पृष्ठ 1–27

5. बौद्ध धर्म के अनुयायी,सिद्धगुप्त के पुत्र तथा आचार्य अवलेकितेश्वर के शिष्य वाग्भट आयुवर्कद चिकित्सा से संबंधित अष्टांगसंग्रह तथा अष्आंगह्दयम ग्रन्थों की रचना की।जो पांचवी शताब्दी के लगभग सिंधु प्रदेश के निवासी थे। इन ग्रन्थों में आयुर्वेद के आठ अंगों सूत्र,निदान,विमान,शरीर,एंडिरिया,चिकित्सा,कल्पऔरसिद्ध का समावेश है।

टीकाकार शिवनाथ, आयुर्वेदाचार्य महर्षि वाग्भट, वैदिक प्रकाशन, काशी, 1987, पृष्ठ 3

6. अथर्ववेद में आयुर्वेद – भारत के प्राचीनतम वाड्मय वेद ज्ञान के आदि स्त्रोत है। आचार्य सुश्रुत ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपांग एवं वाग्भट ने अथर्ववेद का उपवेद तथा महर्षि चरक ने अथर्ववेद से घनिष्ठता के कारण इसे पुण्यतम वेद कहा है।

महाभारत में आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद कहा गया है,ब्रह्मवैवर्तपुराण में आयुर्वेद को पंचम वेद कहा गया है, आयुर्वेदोत्तर ग्रन्थों में सर्वप्रथम इसका उल्लेख पाणिनिकृत अष्टाध्यायी में मिलता है–

आयुर्हिताहितं व्याधिर्निदानं शमनं तथा।

विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्चयते ।।

शास्त्रों में आयु अर्थात् सुखी आयु,दुःखी आयु,हितकर या लाभदायक आयु और अहितकर या हानिकारक आयु,आहार–विहार या स्वस्थवृत्त के लिए औषध– का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उस शास्त्र का नाम ही आयुर्वेद है–

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्चयते।।

जितने समय पर्यन्त शरीर एवं आत्मा का संयोग रहता है, उतने समय का नाम **आयु** है जो धर्मादि सिद्धि के लिए निर्धारित है।

आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विदन्दन्ति इत्यायुर्वेदः।

शरीर एवं जीव का योग जीवन कहलाता है, उससे युक्त काल का नाम आयु है।

आयुर्वेद का प्रयोजन–

व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः,स्वस्थरय रक्षणं चं।

इसके द्वारा रोगियों को रोग से मुक्ति मिलती है और स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

प्रयोजनं चास्य स्वस्थरय स्वास्थ्यरक्षणमातर विकारप्रशमन च ।

महाभारत,सभापूर्व 11/13 पर नीलकण्ठ की व्याख्या।

चरक सूक्त 1/41

सुश्रुत सूक्त 1–14,15

7. कविराज शिवराम दुबे ; सुश्रुत संहिता की टीका, आर्य संस्कृत प्रकाशन,ऋषिकेश,1997 पृष्ठ 31–39
8. आचार्य बद्री उपाध्याय , सुश्रुत संहिता–शल्य चिकित्सा का एक अलौकिक ग्रन्थ, बनारस,1999,पृष्ठ संख्या 75–76
9. पण्डित, श्री शिवराम द्विवेदी, आचार्य सुश्रुत, भाषा–संस्कृत, इलाहबाद, 1983, पृष्ठ 17–18
10. काशी पण्ड़ित हरिशंकर , शल्य चिकित्सा के जनक आचार्य सुश्रुत, काशी विश्वनाथ प्रकाशन, काशी, 1983,पृष्ठ 114–15